Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शासकीय एवं निजी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

आयूष मिश्र [1*], प्रो.राम सरदार यादव [2]

[1] शोधार्थी (पीएच.डी.), शिक्षा संकाय, का० सु० साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध-निर्देशक, शिक्षा संकाय, का० सु० साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * आयूष मिश्र

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21295949

Abstract

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शासकीय एवं निजी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि का अध्ययन, दोनों समूहों का तुलनात्मक विश्लेषण तथा इन चरों के मध्य संबंध का परीक्षण करना था। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि शासकीय एवं निजी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा जीवन संतुष्टि में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है तथा दोनों आयामों में शासकीय शिक्षकों का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया। पुरुष एवं महिला शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ, जबकि जीवन संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। साथ ही, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि के मध्य मध्यम स्तर का सांख्यिकीय रूप से सार्थक धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ।

निष्कर्षतः, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि उच्च शिक्षा में शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता एवं शैक्षिक गुणवत्ता से संबद्ध महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक आयाम हैं। अतः शिक्षकों के मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक कल्याण को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों को संस्थागत स्तर पर सुदृढ़ किया जाना अपेक्षित है।)

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-06-2026
- **Accepted:** 02-07-2026
- **Published:** 10-07-2026
- **MRR:**4(7); 2026: 46-55
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

आयूष मिश्र, प्रो.राम सरदार यादव. लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शासकीय एवं निजी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(7):46-55.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

कुंजी शब्द: आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता, जीवन संतुष्टि, उच्च शिक्षा, शासकीय शिक्षक, निजी शिक्षक

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है। यह केवल ज्ञान प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि मानव व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का माध्यम भी है। उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों में कार्यरत शिक्षक विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः शिक्षकों का मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक रूप से संतुलित होना शिक्षा की गुणवत्ता के लिए आवश्यक माना जाता है।

वर्तमान समय में उच्च शिक्षा क्षेत्र अनेक चुनौतियों से गुजर रहा है। शिक्षकों पर बढ़ता कार्यभार, प्रशासनिक दबाव, प्रतिस्पर्धा तकनीकी परिवर्तन तथा व्यावसायिक असुरक्षा जैसी परिस्थितियाँ उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं जीवन संतुष्टि को प्रभावित कर रही हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षकों के मानसिक एवं आध्यात्मिक कल्याण का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।UNESCO (2021) के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का मानसिक एवं भावनात्मक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता आधुनिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में उभरकर सामने आई हैर्। Vaughan (2002), Danah Zohar & Ian Marshall (2000) के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति जीवन के उद्देश्य, मूल्यों एवं गहरे अर्थ को समझता है तथा अपने व्यवहार को नैतिकता एवं आत्म-जागरूकता के आधार पर संचालित करता है। Emmons (2000) ने इसे ऐसी आंतरिक क्षमता माना है जो व्यक्ति को जीवन की समस्याओं का सकारात्मक एवं रचनात्मक समाधान खोजने में सहायता प्रदान करती है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता व्यक्ति में आत्मनियंत्रण, सहानुभूति, धैर्य एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास में सहायक होती है।

इसी प्रकार जीवन संतुष्टि व्यक्ति के समग्र जीवन के प्रति उसकी संतुष्टि एवं सकारात्मक मूल्यांकन को व्यक्त करती है। Diener, Emmons, Larsen, & Griffin, 1985 के अनुसार जीवन संतुष्टि वह संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन की परिस्थितियों एवं उपलब्धियों का मूल्यांकन करता है। उच्च जीवन संतुष्टि व्यक्ति को मानसिक शांति, भावनात्मक स्थिरता एवं सामाजिक समायोजन प्रदान करती है।

नई शिक्षा नीति 2020 में भी मूल्यपरक शिक्षा, नैतिक विकास एवं समग्र व्यक्तित्व विकास पर विशेष बल दिया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा केवल सूचना प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि मानवीय मूल्यों एवं जीवन कौशलों के विकास का माध्यम भी है। ऐसे में शिक्षकों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि का उच्च स्तर शिक्षा की गुणवत्ता को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

लखनऊ जनपद उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख शैक्षिक केंद्र है, जहाँ अनेक शासकीय एवं निजी उच्च शिक्षा संस्थान संचालित हैं। इन संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य-परिस्थितियों, व्यावसायिक अवसरों एवं प्रशासनिक संरचना में विविधता पाई जाती है, जिसके कारण उनके व्यावसायिक अनुभव एवं जीवन संतुष्टि के स्तर में भी अंतर होने की संभावना रहती है। उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षकों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि पर देश एवं विदेश में विभिन्न अध्ययन किए गए हैं, किन्तु लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा के शासकीय एवं निजी शिक्षकों के संदर्भ में इस विषय पर सीमित अध्ययन उपलब्ध हैं। इसी शोध-अंतर को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा के शासकीय एवं निजी शिक्षकों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि का अध्ययन करने हेतु किया जा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षकों के मानसिक एवं आध्यात्मिक कल्याण से संबंधित महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रदान कर सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शासकीय एवं निजी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शासकीय एवं निजी शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

अनुसंधान प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च शिक्षा संस्थानों के शासकीय एवं निजी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि का अध्ययन करने हेतु **वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method)** का प्रयोग किया गया। अध्ययन में दोनों चरों का तुलनात्मक विश्लेषण तथा उनके मध्य सहसंबंध का परीक्षण किया गया।

जनसंख्या एवं नमूना

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में लखनऊ जनपद के शासकीय एवं निजी उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षक सम्मिलित हैं। अध्ययन हेतु कुल 408 शिक्षकों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा किया गया। नमूने में शासकीय एवं निजी संस्थानों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों को समान प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया।

तालिका 1:

श्रेणी	N
शासकीय पुरुष	102

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

शासकीय महिला	102
निजी पुरुष	102
निजी महिला	102
कुल	408

अनुसंधान उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आवश्यक आँकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत मनोवैज्ञानिक मापन उपकरणों का प्रयोग किया गया। अध्ययन में निम्नलिखित मापनियों का उपयोग किया गया—

1. प्रतिभागियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के मापन हेतु **Prof. Rooquiya Zainuddin एवं Ms. Anjum Ahmed** द्वारा विकसित *Spiritual Intelligence Scale (SIS)* का प्रयोग किया गया।

2. प्रतिभागियों के जीवन संतुष्टि स्तर के मापन हेतु **Dr. Sapna Sharma एवं Dr. Savitri Sharma** द्वारा विकसित *Life Satisfaction Scale (LSS)* का उपयोग किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण: Mean, Standard Deviation, Independent Samples t-test तथा Pearson Product Moment Correlation का प्रयोग किया गया।

$H0_1$ शासकीय एवं निजी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका:शासकीय एवं निजी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 2:

समूह	N	M	S.D.	t	p
निजी शिक्षक	204	291.24	25.50	14.78	< .05
शासकीय शिक्षक	204	324.80	19.79		

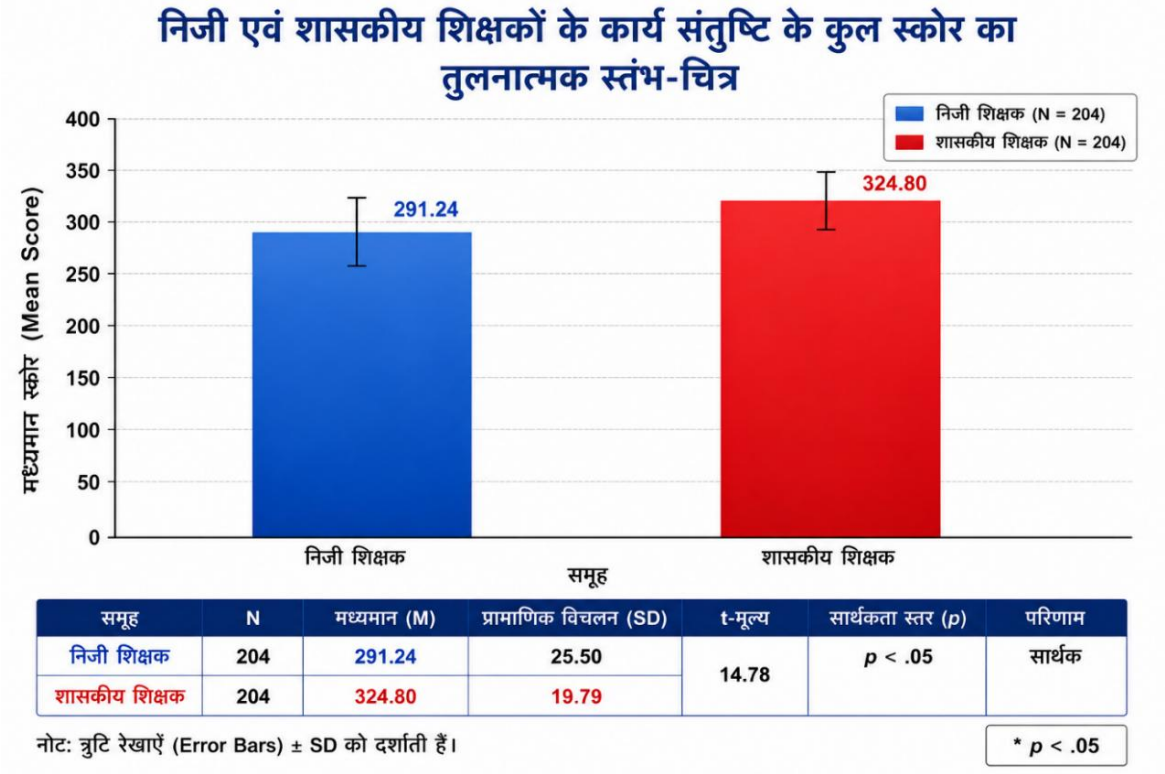

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि निजी एवं शासकीय शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के मध्यमानों में अंतर पाया गया। निजी शिक्षकों का मध्यमान 291.24 तथा शासकीय शिक्षकों का मध्यमान 324.80 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त t -मूल्य 14.78 है, जो 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि निजी एवं शासकीय शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता में सार्थक अंतर विद्यमान है। अध्ययन के परिणाम यह संकेत करते हैं कि शासकीय शिक्षकों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर निजी शिक्षकों की तुलना में अधिक पाया गया। इसका एक संभावित कारण शासकीय शिक्षकों की सेवा-

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सुरक्षा, कार्यस्थल की स्थिरता, अपेक्षाकृत कम प्रशासनिक दबाव तथा दीर्घकालिक व्यावसायिक अनुभव हो सकता है। स्थिर कार्य वातावरण व्यक्ति के मानसिक संतुलन, आत्मचिंतन, धैर्य तथा आंतरिक संतुष्टिविकसित करने में सहायक होता है, जो आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के प्रमुख आयाम माने जाते हैं।

इसके विपरीत निजी शिक्षकों को कार्यस्थल पर अधिक प्रतिस्पर्धा, कार्य-असुरक्षा, कार्यभार एवं प्रशासनिक दबाव का सामना करना पड़ता है। ये परिस्थितियाँ मानसिक तनाव को बढ़ा सकती हैं, जिससे आध्यात्मिक विकास एवं आत्मिक संतुलन प्रभावित हो सकता है। परिणामस्वरूप निजी शिक्षकों का आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता स्तर अपेक्षाकृत कम प्राप्त हुआ।

Emmons (2000), Vaughan (2002) तथा Zohar एवं Marshall (2000) ने प्रतिपादित किया है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का विकास आत्म-जागरूकता, जीवन के उद्देश्य की स्पष्टता, नैतिक मूल्यों तथा आंतरिक संतुलन से संबंधित है। इसी प्रकार UNESCO (2021) एवं OECD (2020) ने भी यह रेखांकित किया है कि सहयोगात्मक कार्य-परिस्थितियाँ, व्यावसायिक स्थिरता तथा शिक्षकों का मानसिक एवं भावनात्मक कल्याण उनके समग्र व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक प्रभावशीलता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष इन अवधारणाओं का समर्थन करते हैं तथा संकेत करते हैं कि अनुकूल एवं सुरक्षित कार्य-परिस्थितियाँ शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

$H0_2$ शासकीय एवं निजी शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका 3: शासकीय एवं निजी शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	N	M	S.D.	t	p
निजी शिक्षक	204	273.20	21.83		
शासकीय शिक्षक	204	313.18	19.46	-19.52	< .05

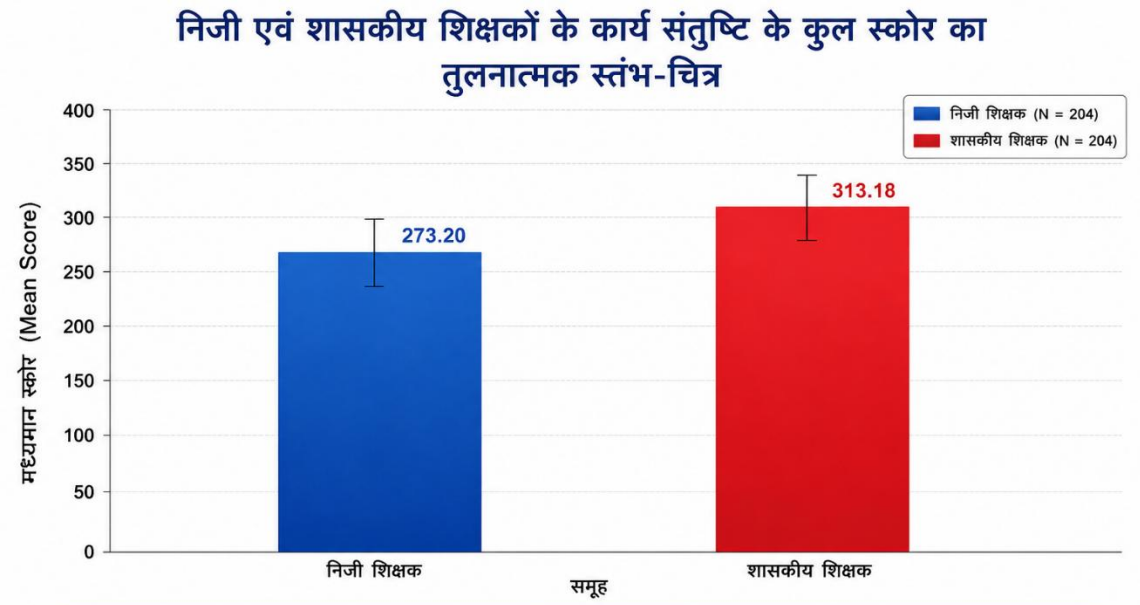

समूह	N	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (SD)	t-मूल्य	सार्थकता स्तर (*p*)	परिणाम
निजी शिक्षक	204	273.20	21.83	-19.52	*p* < .05	सार्थक
शासकीय शिक्षक	204	313.18	19.46			

नोट: त्रुटि रेखाएँ (Error Bars) ± SD को दर्शाती हैं। * *p* < .05

तालिका से स्पष्ट है कि शासकीय शिक्षकों का जीवन संतुष्टि का औसत स्कोर (M = 313.18, SD = 19.46) निजी शिक्षकों के औसत स्कोर (M = 273.20, SD = 21.83) से अधिक है। दोनों समूहों के मध्य अंतर की जांच हेतु स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Samples t-test) किया गया। प्राप्त t-मूल्य -19.52 तथा p-मूल्य < .05 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शासकीय एवं निजी शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। चूँकि p < .05 है, अतः शून्य परिकल्पना (Ho) अस्वीकृत की जाती है। शासकीय शिक्षकों की जीवन संतुष्टि निजी शिक्षकों की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अधिक पाई गई।इन निष्कर्षों का एक प्रमुख कारण शासकीय शिक्षकों को प्राप्त सेवा-सुरक्षा, नियमित वेतनमान, पदोन्नति की स्पष्ट व्यवस्था, पेंशन एवं अन्य सामाजिक सुरक्षा संबंधी

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सुविधाएँ हो सकती हैं। रोजगार की स्थिरता एवं आर्थिक सुरक्षा व्यक्ति में भविष्य के प्रति विश्वास उत्पन्न करती है, जिससे तनाव एवं असुरक्षा की भावना अपेक्षाकृत कम होती है और जीवन के प्रति संतोष का स्तर बढ़ता है। इसके अतिरिक्त शासकीय संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को अनुसंधान, प्रशिक्षण, शैक्षणिक उन्नयन तथा प्रशासनिक सहयोग के अपेक्षाकृत अधिक अवसर प्राप्त होते हैं, जो उनके व्यावसायिक विकास एवं आत्मसंतुष्टि को सुदृढ़ करते हैं।

इसके विपरीत निजी उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को प्रायः कार्य-असुरक्षा, अनुबंध आधारित नियुक्ति, अधिक कार्यभार, प्रदर्शन-आधारित मूल्यांकन, सीमित पदोन्नति अवसर तथा वेतन एवं सेवा-शर्तों में असमानता जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियाँ शिक्षकों के मानसिक तनाव, व्यावसायिक असंतोष तथा भविष्य के प्रति अनिश्चितता को बढ़ा सकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनके जीवन संतुष्टि के स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

प्राप्त निष्कर्ष सकारात्मक मनोविज्ञान (Positive Psychology) की अवधारणा के भी अनुरूप हैं, जिसके अनुसार आर्थिक स्थिरता, कार्यस्थल का सहयोगात्मक वातावरण, व्यावसायिक सम्मान, सामाजिक सुरक्षा तथा कार्य-जीवन संतुलन व्यक्ति की जीवन संतुष्टि को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। जब शिक्षक स्वयं मानसिक एवं सामाजिक रूप से संतुष्ट होते हैं, तब वे अपने शिक्षण कार्य में अधिक प्रतिबद्धता, रचनात्मकता एवं प्रभावशीलता का प्रदर्शन करते हैं, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है।

Diener (1984) तथा Diener, Emmons, Larsen एवं Griffin (1985) ने प्रतिपादित किया है कि जीवन संतुष्टि व्यक्ति के जीवन की परिस्थितियों, उपलब्धियों, सामाजिक संबंधों एवं व्यक्तिगत अनुभवों के समग्र मूल्यांकन का परिणाम है। इसी प्रकार OECD (2020) तथा UNESCO (2021) ने यह रेखांकित किया है कि सेवा-सुरक्षा, सहयोगात्मक कार्य-परिस्थितियाँ, व्यावसायिक विकास के अवसर तथा मानसिक एवं भावनात्मक कल्याण शिक्षकों की जीवन संतुष्टि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष इन अवधारणाओं का समर्थन करते हैं तथा संकेत करते हैं कि शासकीय शिक्षकों को प्राप्त संस्थागत स्थिरता, सामाजिक सुरक्षा एवं व्यावसायिक सहयोग उनके जीवन संतुष्टि के उच्च स्तर में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

$H0_3$पुरुष एवं महिला शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका 4: पुरुष एवं महिला शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	N	M	S.D.	t	p
पुरुष शिक्षक	204	314.47	34.33	4.70	< .05
महिला शिक्षक	204	301.56	18.60		

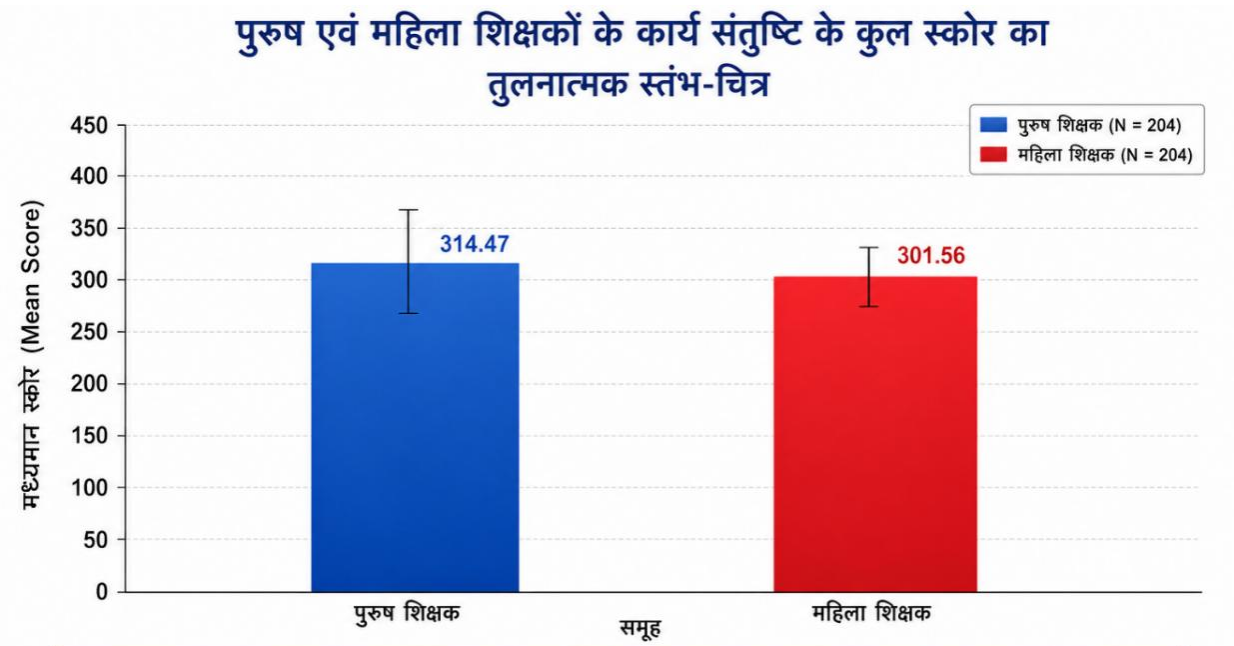

समूह	N	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (SD)	t-मूल्य	सार्थकता स्तर (*p*)	परिणाम
पुरुष शिक्षक	204	314.47	34.33	4.70	*p* < .05	सार्थक
महिला शिक्षक	204	301.56	18.60			

नोट: त्रुटि रेखाएँ (Error Bars) ± SD को दर्शाती हैं।

* *p* < .05

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तालिका से स्पष्ट है कि पुरुष शिक्षकों का आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का औसत स्कोर (M = 314.47, SD = 34.33) महिला शिक्षकों के औसत स्कोर (M = 301.56, SD = 18.60) से अधिक है। दोनों समूहों के मध्य अंतर की जाँच हेतु स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Samples t-test) किया गया। प्राप्त t-मूल्य 4.70 तथा p-मूल्य .05 से कम है, जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः पुरुष एवं महिला शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया।चूँकि $p < .05$, अतः शून्य परिकल्पना (Ho_3) अस्वीकृत की जाती है। पुरुष शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता महिला शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक पाई गई।प्राप्त निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि अध्ययन में सम्मिलित पुरुष शिक्षकों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया। इसका एक संभावित कारण यह हो सकता है कि पुरुष शिक्षकों को शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन के दौरान विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं, जो उनके आत्मचिंतन, निर्णय क्षमता, जीवन-दृष्टि तथा मूल्यपरक चिंतन के विकास में सहायक होते हैं। निरंतर व्यावसायिक अनुभव एवं विभिन्न परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया भी आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के विकास को प्रभावित कर सकती है।

दूसरी ओर, महिला शिक्षकों को अपने व्यावसायिक दायित्वों के साथ-साथ पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का भी समान रूप से निर्वहन करना पड़ता है। अनेक परिस्थितियों में कार्य एवं परिवार के मध्य संतुलन स्थापित करने का दबाव, समय की सीमाएँ तथा बहुआयामी भूमिकाएँ उनके आत्मविकास एवं आत्मचिंतन के लिए उपलब्ध समय को प्रभावित कर सकती हैं। यद्यपि यह स्थिति सभी महिला शिक्षकों पर समान रूप से लागू नहीं होती, तथापि अध्ययन में प्राप्त परिणाम इस दिशा में संभावित प्रभाव की ओर संकेत करते हैं।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता केवल धार्मिक आस्था तक सीमित न होकर जीवन के उद्देश्य, नैतिक मूल्यों, आत्म-जागरूकता, करुणा, सहानुभूति तथा परिस्थितियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से संबंधित एक व्यापक मनोवैज्ञानिक क्षमता है। जिन व्यक्तियों में आत्मचिंतन, भावनात्मक संतुलन तथा जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक विकसित होता है, उनमें आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर भी अपेक्षाकृत उच्च पाया जाता है। अध्ययन के परिणाम इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं कि लिंग के आधार पर इन क्षमताओं में कुछ अंतर विद्यमान हो सकता है।

यह निष्कर्ष इस आवश्यकता को भी रेखांकित करता है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में सभी शिक्षकों के लिए ऐसे शैक्षणिक एवं व्यावसायिक वातावरण का निर्माण किया जाए, जो आत्मचिंतन, नैतिक मूल्यों, भावनात्मक संतुलन, मानसिक स्वास्थ्य तथा आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करे। विशेष रूप से ध्यान, योग, मूल्यपरक शिक्षा, तनाव प्रबंधन, परामर्श सेवाओं एवं व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को और अधिक विकसित किया जा सकता है। इससे न केवल शिक्षकों का व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास होगा, बल्कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

Emmons (2000), Vaughan (2002) तथा Zohar एवं Marshall (2000) ने प्रतिपादित किया है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता आत्म-जागरूकता, जीवन के उद्देश्य की स्पष्टता, नैतिक मूल्यों, आत्म-नियंत्रण तथा परिस्थितियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास से संबंधित है। इसी प्रकार King (2008) तथा King एवं DeCicco (2009) ने भी स्पष्ट किया है कि आत्मचिंतन, अस्तित्वगत चिंतन तथा अनुभवों के सार्थक विश्लेषण की क्षमता आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के प्रमुख आयाम हैं। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष इन अवधारणाओं का समर्थन करते हैं तथा संकेत करते हैं कि व्यावसायिक अनुभव, आत्मचिंतन एवं अनुकूल कार्य-परिस्थितियाँ शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। तथापि, लिंग के आधार पर प्राप्त अंतर की व्याख्या सामाजिक एवं व्यावसायिक संदर्भों के आलोक में की जानी चाहिए तथा इसे किसी एक लिंग की सार्वभौमिक विशेषता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

$H0_4$पुरुष एवं महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका 5: पुरुष एवं महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	N	M	S.D.	t	p
पुरुष शिक्षक	204	291.85	29.43		
महिला शिक्षक	204	294.53	28.08	-0.94	0.348

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

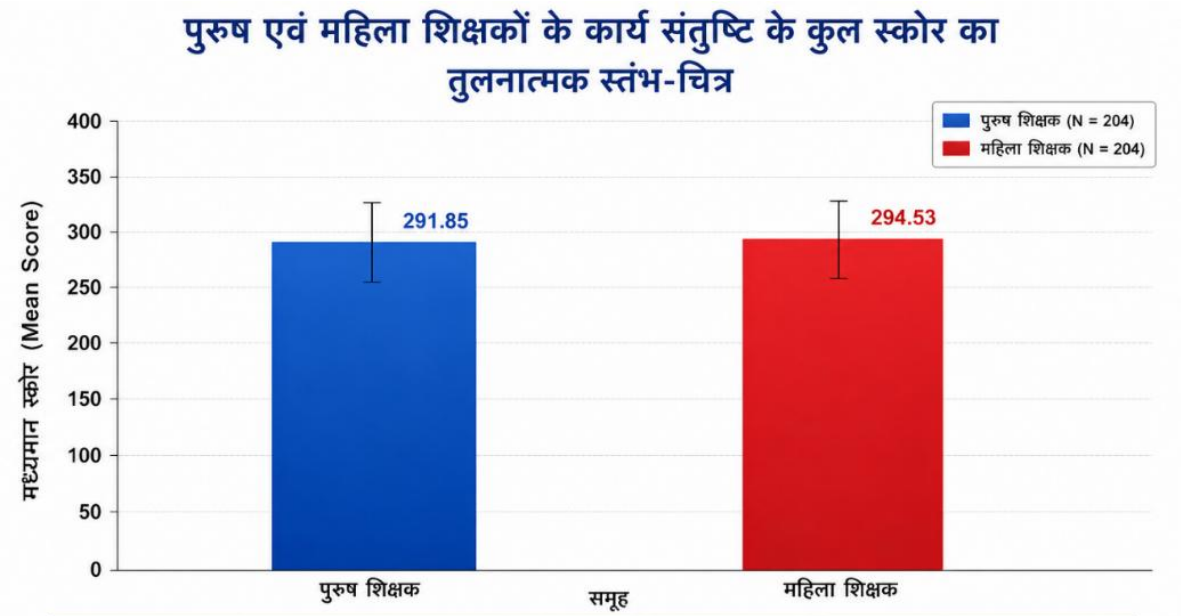

समूह	N	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (SD)	t-मूल्य	सार्थकता स्तर (*p*)	परिणाम
पुरुष शिक्षक	204	291.85	29.43	-0.94	0.348	असार्थक
महिला शिक्षक	204	294.53	28.08			

नोट: त्रुटि रेखाएँ (Error Bars) ± SD को दर्शाती हैं। $p > .05$ (असार्थक)

तालिका से स्पष्ट है कि पुरुष शिक्षकों का औसत जीवन संतुष्टि स्कोर 291.85 (SD = 29.43) तथा महिला शिक्षकों का औसत जीवन संतुष्टि स्कोर 294.53 (SD = 28.08) है। दोनों समूहों के मध्य अंतर की जाँच हेतु स्वतंत्र नमूना *t*-परीक्षण किया गया। प्राप्त *t*-मूल्य -0.94 तथा *p*-मूल्य 0.348 है, जो 0.05 स्तर से अधिक है। अतः पुरुष एवं महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

यह परिणाम संकेत करता है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षक समान प्रकार के व्यावसायिक वातावरण, शैक्षणिक उत्तरदायित्वों तथा संस्थागत अपेक्षाओं के अंतर्गत कार्य करते हैं, जिसके कारण उनके जीवन संतुष्टि के स्तर में उल्लेखनीय अंतर परिलक्षित नहीं होता। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत दोनों वर्गों के शिक्षकों को समान प्रकार के शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं व्यावसायिक अवसर प्राप्त हो रहे हैं, जिससे उनके व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन के प्रति संतुष्टि का स्तर भी लगभग समान बना रहता है।

जीवन संतुष्टि एक बहुआयामी मनोवैज्ञानिक अवधारणा है, जो केवल लिंग पर निर्भर न होकर व्यक्ति की आर्थिक सुरक्षा, कार्य-परिस्थितियों, पारिवारिक सहयोग, सामाजिक संबंधों, स्वास्थ्य, व्यावसायिक उपलब्धियों तथा व्यक्तिगत अपेक्षाओं जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होती है। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि इन कारकों का प्रभाव पुरुष एवं महिला शिक्षकों पर लगभग समान रूप से पड़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप दोनों समूहों की जीवन संतुष्टि में सांख्यिकीय रूप से कोई महत्वपूर्ण अंतर प्राप्त नहीं हुआ।

यह निष्कर्ष इस तथ्य को भी रेखांकित करता है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के लिए सहयोगात्मक कार्य वातावरण, संस्थागत समर्थन, व्यावसायिक विकास के अवसर तथा कार्य-जीवन संतुलन की उपलब्धता, लिंग की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में वृद्धि हेतु ऐसी नीतियों एवं कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो सभी शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, व्यावसायिक संतुष्टि तथा समग्र कल्याण को समान रूप से सुदृढ़ करें

Diener (1984) तथा Diener, Emmons, Larsen एवं Griffin (1985) ने प्रतिपादित किया है कि जीवन संतुष्टि व्यक्ति के समग्र जीवन के संज्ञानात्मक मूल्यांकन का परिणाम है, जो अनेक व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक कारकों से प्रभावित होती है। इसी प्रकार OECD (2020) तथा UNESCO (2021) ने यह स्पष्ट किया है कि सहयोगात्मक कार्य-परिस्थितियाँ, व्यावसायिक विकास के अवसर, संस्थागत समर्थन तथा कार्य-जीवन संतुलन शिक्षकों के मानसिक कल्याण एवं जीवन संतुष्टि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष इन अवधारणाओं का समर्थन करते हैं तथा संकेत करते हैं कि जब पुरुष एवं महिला शिक्षकों को समान प्रकार की व्यावसायिक परिस्थितियाँ, संस्थागत सहयोग एवं विकास के अवसर उपलब्ध होते हैं, तब उनके जीवन संतुष्टि के स्तर में उल्लेखनीय अंतर परिलक्षित नहीं होता।

$H0_5$ आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।"

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तालिका 6:

चर	N	M	SD	r	t	p
आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता	408	308.19	28.26	0.485	11.18	< .05
जीवन संतुष्टि	408	293.15	28.74			

तालिका से स्पष्ट है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक सहसंबंध ($r = 0.485$) पाया गया। प्राप्त t-मूल्य = 11.18 तथा $p < .05$ है, जो .05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि जिन शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता अधिक है, उनमें जीवन संतुष्टि का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है।चूँकि प्राप्त p-मूल्य .05 से कम है, अतः शून्य परिकल्पना (Ho_5) अस्वीकृत की जाती है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया है।

यह निष्कर्ष इंगित करता है कि जिन शिक्षकों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर अधिक होता है, उनमें जीवन संतुष्टि का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को जीवन के उद्देश्य, नैतिक मूल्यों, आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण तथा परिस्थितियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता प्रदान करती है। ऐसी विशेषताएँ व्यक्ति को तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी मानसिक संतुलन बनाए रखने तथा जीवन की चुनौतियों का रचनात्मक ढंग से सामना करने में सक्षम बनाती हैं, जिससे जीवन के प्रति संतोष एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण में वृद्धि होती है।

उच्च शिक्षा के संदर्भ में यह संबंध विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षक अनेक शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का

निर्वहन करते हैं। जिन शिक्षकों में आत्मचिंतन, नैतिक प्रतिबद्धता, करुणा, सहानुभूति तथा जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक विकसित होता है, वे अपने व्यावसायिक दायित्वों का अधिक प्रभावी ढंग से निर्वहन करने के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन में भी अधिक संतुष्टि का अनुभव करते हैं। परिणामस्वरूप उनकी कार्यक्षमता, शिक्षण की गुणवत्ता तथा विद्यार्थियों के साथ उनके संबंधों पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्राप्त निष्कर्ष सकारात्मक मनोविज्ञान तथा समग्र व्यक्तित्व विकास की अवधारणा का समर्थन करते हैं, जिनके अनुसार आध्यात्मिक विकास व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन तथा जीवन संतुष्टि को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए उच्च शिक्षा संस्थानों में ध्यान, योग, मूल्यपरक शिक्षा, नैतिक नेतृत्व, परामर्श सेवाओं तथा मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि दोनों में वृद्धि हो सके। इससे न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक कल्याण को प्रोत्साहन मिलेगा, बल्कि संपूर्ण उच्च शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता भी सुदृढ़ होगी।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य लखनऊ जनपद के उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शासकीय एवं निजी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि का अध्ययन करना तथा दोनों चरों के मध्य संबंध का परीक्षण करना था। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि शासकीय एवं निजी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा जीवन संतुष्टि में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है। अध्ययन में शासकीय शिक्षकों का आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि का स्तर निजी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि सेवा-सुरक्षा, स्थायी कार्यपरिस्थितियाँ, संस्थागत सहयोग तथा व्यावसायिक स्थिरता जैसे कारक इन दोनों मनोवैज्ञानिक चरों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

अध्ययन में पुरुष एवं महिला शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर प्राप्त हुआ, जबकि जीवन संतुष्टि के संदर्भ में दोनों समूहों के मध्य कोई सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ। इससे यह स्पष्ट होता है कि जीवन संतुष्टि केवल लिंग पर आधारित न होकर आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, संस्थागत एवं व्यावसायिक परिस्थितियों जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होने वाली बहुआयामी मनोवैज्ञानिक अवधारणा है।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि के मध्य मध्यम स्तर का सार्थक धनात्मक सहसंबंध विद्यमान है। इससे स्पष्ट होता है कि जिन शिक्षकों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर अधिक होता है, उनमें जीवन संतुष्टि का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। यह संबंध इस तथ्य की पुष्टि करता है कि आत्म-जागरूकता, नैतिक मूल्य, जीवन के उद्देश्य की स्पष्टता, भावनात्मक संतुलन तथा सकारात्मक जीवन-दृष्टि शिक्षकों के समग्र मनोवैज्ञानिक कल्याण को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

समग्र रूप से अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि उच्च शिक्षा की गुणवत्ता केवल भौतिक संसाधनों अथवा शैक्षणिक उपलब्धियों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि शिक्षकों के मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक कल्याण से भी गहराई से जुड़ी हुई है। अतः उच्च शिक्षा संस्थानों में ऐसी नीतियों, कार्यक्रमों एवं कार्यपरिस्थितियों को विकसित किए जाने की आवश्यकता है, जो शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता, मानसिक स्वास्थ्य एवं जीवन संतुष्टि को प्रोत्साहित करें। इससे शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता, कार्यनिष्ठा, शिक्षण की गुणवत्ता तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और उच्च शिक्षा प्रणाली अधिक प्रभावी, मानवीय एवं गुणवत्तापूर्ण बन सकेगी।

यह निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों द्वारा भी समर्थित है। Emmons (2000), Vaughan (2002), King (2008) तथा King एवं DeCicco (2009) ने प्रतिपादित किया है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता व्यक्ति में आत्म-जागरूकता, जीवन के उद्देश्य की स्पष्टता, नैतिक मूल्यों तथा सकारात्मक जीवन-दृष्टि का विकास करती है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण सुदृढ़ होता है। इसी प्रकार Diener (1984) तथा Diener, Emmons, Larsen एवं Griffin (1985) के अनुसार जीवन संतुष्टि व्यक्ति द्वारा अपने जीवन के समग्र संज्ञानात्मक

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मूल्यांकन का परिणाम है, जो सकारात्मक मनोवैज्ञानिक गुणों एवं अनुकूल जीवन-अनुभवों से प्रभावित होती है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष इन पूर्ववर्ती अध्ययनों का समर्थन करते हैं तथा संकेत करते हैं कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता शिक्षकों की जीवन संतुष्टि को सुदृढ़ करने वाला एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक है। अतः उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों के आध्यात्मिक, मानसिक एवं व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों एवं कार्यक्रमों को प्राथमिकता प्रदान की जानी चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए अनेक महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि उनके व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। अतः उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों के मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक कल्याण को प्रोत्साहित करने हेतु संस्थागत स्तर पर विशेष प्रयास किए जाने चाहिए।

शिक्षकों के लिए नियमित रूप से योग, ध्यान, तनाव प्रबंधन, मूल्यपरक शिक्षा, व्यक्तित्व विकास तथा मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे शिक्षकों में आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, सकारात्मक दृष्टिकोण एवं नैतिक मूल्यों का विकास होगा, जो उनकी आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि में वृद्धि करेगा।

अध्ययन में शासकीय एवं निजी शिक्षकों के मध्य प्राप्त अंतर यह संकेत करता है कि निजी उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा-सुरक्षा, व्यावसायिक स्थिरता, संस्थागत सहयोग तथा कार्य-जीवन संतुलन को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। यदि शिक्षकों को अनुकूल कार्यपरिस्थितियाँ, व्यावसायिक विकास के अवसर एवं मानसिक सहयोग प्रदान किया जाए, तो उनकी कार्यक्षमता, शिक्षण गुणवत्ता तथा विद्यार्थियों के साथ शैक्षिक अंतःक्रिया में सकारात्मक सुधार संभव है।

अतः शिक्षा नीति निर्माताओं, विश्वविद्यालय प्रशासन एवं उच्च शिक्षा संस्थानों को ऐसी नीतियाँ एवं कार्यक्रम विकसित करने चाहिए, जिनके माध्यम से शिक्षकों के समग्र कल्याण को प्राथमिकता दी जा सके। इससे न केवल शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता एवं कार्यसंतोष में वृद्धि होगी, बल्कि उच्च शिक्षा की गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता भी सुदृढ़ होगी।

अध्ययन की सीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन लखनऊ जनपद के शासकीय एवं निजी उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों तक सीमित है, इसलिए इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण अन्य जनपदों अथवा राज्यों के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों पर सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।

अध्ययन में केवल दो चरों—आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि—का अध्ययन किया गया है। शिक्षकों के व्यावसायिक जीवन को प्रभावित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण कारकों, जैसे कार्य संतुष्टि, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, व्यावसायिक तनाव, मानसिक स्वास्थ्य एवं संगठनात्मक वातावरण को इसमें सम्मिलित नहीं किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है तथा आँकड़ों का संकलन स्व-प्रतिवेदन (Self-report) मापनियों के माध्यम से किया गया है। अतः प्रतिभागियों की व्यक्तिगत धारणाओं एवं उत्तरों की वस्तुनिष्ठता का प्रभाव परिणामों पर पड़ सकता है।

यह अध्ययन एक विशिष्ट समयावधि में किया गया है। समय के साथ शैक्षिक, सामाजिक एवं संस्थागत परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर परिणामों में भी परिवर्तन संभव है।

भविष्य के लिए सुझाव

भविष्य में इसी विषय पर विभिन्न राज्यों एवं विश्वविद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित करते हुए व्यापक स्तर पर अध्ययन किए जा सकते हैं, जिससे निष्कर्षों का अधिक व्यापक सामान्यीकरण संभव हो सके।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि के साथ कार्य संतुष्टि, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, व्यावसायिक तनाव, मानसिक स्वास्थ्य, संगठनात्मक प्रतिबद्धता तथा कार्य-जीवन संतुलन जैसे अन्य मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक चरों को सम्मिलित कर बहुआयामी अध्ययन किए जा सकते हैं।

भविष्य में अनुदैर्ध्य (Longitudinal) तथा मिश्रित अनुसंधान (Mixed Methods Research) के माध्यम से यह अध्ययन किया जा सकता है कि समय के साथ शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि में किस प्रकार परिवर्तन होता है तथा कौन-कौन से कारक उन्हें प्रभावित करते हैं।

उच्च शिक्षा संस्थानों में योग, ध्यान, मूल्यपरक शिक्षा एवं मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों के प्रभाव का प्रयोगात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है, जिससे शिक्षकों के समग्र विकास हेतु प्रभावी हस्तक्षेप (Intervention Programmes) विकसित किए जा सकें।

इसके अतिरिक्त शासकीय एवं निजी संस्थानों की कार्यपरिस्थितियों, संस्थागत संस्कृति एवं प्रशासनिक नीतियों का शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं जीवन संतुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का भी विस्तृत अध्ययन किया जाना चाहिए, जिससे उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए अधिक प्रभावी नीतिगत सुझाव विकसित किए जा सकें।

संदर्भ सूची

1. Diener E, Emmons RA, Larsen RJ, Griffin S. The Satisfaction with Life Scale. J Pers Assess. 1985;49(1):71-75.
2. Emmons RA. Is spirituality an intelligence? Motivation, cognition, and the psychology of ultimate concern. Int J Psychol Relig. 2000;10(1):3-26.
3. King DB. *Rethinking claims of spiritual intelligence: A definition, model, and measure* [master's thesis]. Peterborough (ON): Trent University; 2008.
4. King DB, DeCicco TL. A viable model and self-report measure of spiritual intelligence. Int J Transpers Stud. 2009;28(1):68-85.
5. Ministry of Education. *National Education Policy 2020*. New Delhi: Government of India; 2020.
6. Organisation for Economic Co-operation and Development. *Teachers and school leaders as lifelong learners*. Paris: OECD Publishing; 2020.

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

7. Paloutzian RF, Park CL, editors. *Handbook of the psychology of religion and spirituality*. 2nd ed. New York: Guilford Press; 2013.
8. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization. *Reimagining our futures together: A new social contract for education*. Paris: UNESCO Publishing; 2021.
9. Vaughan F. What is spiritual intelligence? J Humanist Psychol. 2002;42(2):16-33.
10. World Health Organization. *World mental health report: Transforming mental health for all*. Geneva: World Health Organization; 2022.
11. Zohar D, Marshall I. *SQ: Spiritual intelligence, the ultimate intelligence*. London: Bloomsbury Publishing; 2000.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Corresponding Author

आयुष मिश्र शिक्षा संकाय, का. सु. साकेत पी.जी. कॉलेज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत से संबद्ध हैं। उनकी शैक्षणिक एवं शोध रुचियाँ शिक्षक शिक्षा, शैक्षिक मनोविज्ञान, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ, शैक्षिक नवाचार तथा समकालीन शिक्षा नीति से संबंधित हैं। वे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं शोध के माध्यम से शैक्षिक विकास में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/